विषय :- हिंदी एवं मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री–अस्मिता का प्रश्न

शोध-निर्देशक

प्रो. हेमलता महिश्वर

शोधार्थी

डी अरुणा

पी एच - डी. (हिन्दी)

आवेधन तिथि : 21 /06/2022

अवेधन संख्या : 515 /2022

हिन्दी विभाग

मानविकी एवं भाषा संकाय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली – 110025

शोध की स्थापनाएँ : -

- विभिन्न प्रान्त के विविध क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करनेवाली इन दलित स्त्री आत्मकथाओं में पितृसत्ता और ब्राह्मणवाद का शिकंजा समरूप है |
- हिन्दी एवं मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं में अम्बेडकरवाद के प्रभाव में पितृसत्ता का मुखर एवं प्रभावशाली विरोध सहज दृष्टव्य है |
- ब्राह्मणवाद और वर्ण व्यवस्था के सूत्र अभी भी शिथिल नहीं हुए हैं |
- दलित समाज की स्त्रियाँ उच्च वर्णीय स्त्री की तुलना में पितृसत्ता का बंधन तोड़ सकती हैं लेकिन ब्राह्मणवाद का बंधन तोड़ने में सफल नहीं हुई हैं |
- हिन्दी एवं मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं में दलित समाज में प्रयुक्त होने वाले कुछ नये शब्दों का पता चला | यह हिन्दी भाषा को समृद्ध करने में सहायक होगा | जैसे : बिर्रा के रोटी, सीला, चूल्हे का लूगड़ा |

हिन्दी एवं मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं में बुद्ध, फुले एवं डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं | दलित स्त्री को जीवन में शिक्षित होने के लिए अकथनीय संघर्ष करना पड़ता है | जातीय उत्पीड़न की वजह से प्रगति के हर कदम पर आनेवाली कठिनाइयों से जूझना, आर्थिक सबलता के लिए कठिन प्रयास एवं भूख से लड़ाई करनी पड़ती है| स्त्री होने के कारण उसका तिहरा शोषण होता है | घर और बाहर होने वाली अवहेलना, अपमान और शोषण झेलना पड़ता है | लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथाओं में इन प्रसंगों, घटनाओं एवं संघर्षों का चित्रण प्रमुख रूप से किया है|

दलित स्त्री आत्मकथाकारों ने जिस परिवार, समाज, संस्कृति, राजनीति का अपनी आत्मकथाओं में वर्णन किया| इस माध्यम से उन्होंने मनुष्यता को प्राप्त करने की ओर एक और सुदृढ़ कदम आगे बढ़ाया | यहाँ आकर पता चला की दलित स्त्री तिहरे शोषण का शिकार है – दलित होने का, स्त्री होने का और आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण | यह भी पता चला कि दलित स्त्री का शोषण और उपयोग किस तरह से उच्च वर्णीय स्त्रियाँ करती हैं | परिणाम स्वरुप दलित स्त्रीवाद की पुरजोर माँग उठी|

उक्त समस्त प्रकरणों से परिचित होने के बाद हिंदी एवं मराठी के दलित स्त्री आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक प्रतीत हुआ| शोषण और दमन का इन दोनों ही भाषा की आत्मकथाओं में लगभग एक जैसा स्वरुप है, किन्तु किंचित अंतर सामाजिक चेतना को लेकर है| महाराष्ट्र में लिखी गयी दलित स्त्री आत्मकथाएँ राजनीतिक रूप से अधिक सजग दिखाई देती हैं | प्रस्तुत शोध - प्रबंध में उक्त समस्त बिंधुओं पर क्रम बद्ध चिंतन करने का प्रयास किया गया है| इस अध्ययन के लिए हिंदी की – कौशल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप', सुशीला टाकभौरे की 'शिकंजे का दर्द', रजनी तिलक की 'अपनी जमीं अपना आसमां' और कावेरी की 'टुकड़ा – टुकड़ा जीवन' एवं मराठी की बेबी कांबले की 'जिणं आमुचं, शांताबाई कृष्णाजी कांबले की 'माज्या जल्माची चित्तरकथा', शांताबाई दाणी की 'रात्रदिन आम्हा' और उर्मिला पवार की 'आयदान' दलित स्त्री आत्मकथाएँ ली गई हैं|

हिन्दी एवं मराठी क्षेत्रों की दलित स्त्री आत्मकथाओं में संघर्ष के स्तर पर बहुत कम अंतर दिखाई देता है| इन आत्मकथाओं में अपने – अपने प्रदेश से जुड़ी संस्कृति दृष्टिगोचर होती है | कुछ आत्मकथाओं में आत्मकथाकार ने अन्तर्जातीय विवाह एवं प्रेम विवाह पर मुखरता से लिखा है| डॉ. अम्बेडकर की विचारधाराएँ अन्तर्जातीय विवाह, जातीय बंधन शिथिल करने में सहायक होंगी | दोनों ही प्रकार के विवाह करनेवाली लेखिकाएँ तथा माता - पिता की इच्छानुसार विवाह करनेवाली लेखिकाओं के जीवन अनुभव रहे हैं |

हिन्दू संस्कृति में सामाजिक - सांस्कृतिक मूल्य स्त्री स्वतंत्रता के विरोधी हैं| सभी दलित लेखिकाओं ने इन सामाजिक मूल्यों को भी आलोचनात्मक दृष्टि से देखा है | इसी तरह वह आर्थिक क्षेत्र में भी सफलता पाकर सशक्त बनी है| सभी आत्मकथाकार महिलाएँ सामाजिक जागृति आन्दोलन से जुड़ी हुई हैं, इसके साथ ही कुछ लेखिकाओं ने राजनीति से जुड़ कर भी काम किया है|

यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि विवेच्य दलित स्त्री आत्मकथाओं में शिक्षा प्राप्त करते समय और शिक्षा प्राप्त करने के बाद परिवर्तन आया है| फुले – अम्बेडकरी दर्शन के प्रभाव ने न केवल इनके संघर्ष को दिशा प्रदान की अपितु ये समाज का नेतृत्व भी करती दिखाई देती हैं| इन्होंने तुलनात्मक रूप से कष्टकारी, श्रमसाध्य जीवन यापन करते हुए निश्चित दिशा को प्राप्त किया है| इसी तरह सामाजिक – सांस्कृति शिकंजे यानी पितृसत्ता और ब्राह्मणवाद की बेड़ियों को तोड़ने में वे अधिक सफल रही हैं|

सभी आत्मकथाओं में लेखिकाओं की भाषा सरल एवं सहज हैं| मुहावरों और कहावतों का उपयोग करने से आत्मकथाओं में रोचकता बढ़ी है| कुछ आत्मकथाओं में लोक कथाओं का विवरण भी मिलता है| अधिकांश आत्मकथाओं में विवरणात्मक शैली और कुछ आत्मकथाओं में विश्लेषणात्मक शैली भी दिखाई देती है|

सभी दलित लेखिकाओं की आत्मकथाओं से समाज की महिलाओं को यह संदेश मिलता है कि अपने जीवन के अन्याय, अत्याचार, शोषण और उत्पीड़न का विरोध करना चाहिए| स्वयं अपने अधिकारों को प्राप्त करके प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए |